Lecture No. 09-10-11.
Date : 07. 12. 2020

History

B.A. Part-II (Hons.) Paper-III rd

पाठ्यक्रम Unit-II : Extension and Integration —

@ Balban — प्रशासनिक व्यवस्था :—

बलबन अयोग्य एवं वृद्ध सैनिकों को पेंशन देकर मुक्त करने की योजना चलायी तथा सैनिकों का वेतन भुगतान नकद किया। बलबन के समय गाँवों से भूमि कर वसूलने का कार्य केंद्रीय सरकार ने अपने ऊपर ले लिया और जागीरदारों को नकद रूपया देने का नियम बना दिया। परंतु दिल्ली के कोतवाल फखरूद्दीन के अनुनयविनय के कारण यह योजना ठीक तरह से लागू नहीं हो पायी। सीमांत प्रांतों पर मंगोलों के आक्रमण को रोकने के लिए उसने अपने चचेरे भाई शेर खाँ एवं बाद में अपने पुत्र मुहम्मद खाँ एवं बुगरा खाँ को नियुक्त किया। मुहम्मद खाँ 1286 ई० में मंगोलों का प्रतिरोध करता हुआ मारा गया।

बलबन ने अपने साम्राज्य विस्तार या किसी नये क्षेत्र की विजय के बजाए साम्राज्य को सुदृढ़ करने का प्रयास किया।

बलबन के दरबार में प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो एवं अमीर हसन रहते थे। इसके अतिरिक्त ज्योतिषी एवं चिकित्सक मौलाना हमीदुद्दीन मुतरिज तथा प्रसिद्ध मौलाना बदरूद्दीन और हिसामुद्दीन भी रहते थे। बरनी ने बलबन के वक्तव्य को उल्लेखित किया है कि — "जब मैं किसी तुच्छ परिवार के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरे शरीर की प्रत्येक नाड़ी क्रोध से उत्तेजित हो जाती है।"

बलबन का राजत्व-सिद्धान्त :

बलबन दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने अपने राजत्व-सिद्धान्त की पूर्ण व्याख्या की। राजस्व के संबंध में बलबन का सिद्धान्त राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धांत के सदृश है। उसने राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि (नियामते खुदाई) माना है।

Continue .....

Dr. Madan Paswan,

Sub :- History.

B.A. Part-I (Sub.) Paper

07.12.2020

(2)

पाठ्यक्रम Unit-II : प्राचीन भारत :-

(i) Mauryan Empire - चन्द्रगुप्त मौर्य :-

सामाज्य का गठन :

मौर्यों ने प्रशासन की एक विस्तृत व्यवस्था और तंत्र स्थापित किया। इसका उल्लेख मेगस्थनीज के लेखन और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है। मेगस्थनीज एक यूनानी राजदूत थे, जो सेल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजे गए थे। वे मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में रहते थे, यहाँ रहकर उन्होंने पाटलिपुत्र नगर के प्रशासन के साथ-साथ पूरे मौर्य साम्राज्य के बारे में लिखा। मेगस्थनीज का लेखन पूर्णतः उपलब्ध नहीं है, लेकिन कई यूनानी लेखकों के लेखन में मेगस्थनीज द्वारा उल्लिखित उद्धरण मिलते हैं। इन उद्धरणों को संगृहीत कर 'इण्डिका' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जो मौर्य काल के प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था पर यथोचित प्रकाश डालती है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र को मेगस्थनीज के लेखन का पूरक माना जा सकता है। समग्र रूप से अर्थशास्त्र का संकलन मौर्य काल के कुछेक शताब्दी बाद भले ही किया गया हो, लेकिन इसके कुछ अध्यायों में, मौर्ययुगीन प्रशासन और अर्थव्यवस्था के बारे में वास्तविक सूचना और सामग्री मिलती है। इन दोनों स्रोतों से हमें चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रशासनिक व्यवस्था को समझने में मदद मिलती है। इनके साम्राज्य के गठन को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :-

(A)

चन्द्रगुप्त मौर्य स्पष्ट रूप से पूर्ण शासक थे, उन्होंने सारी शक्ति अपने अधीन कर ली थी। अर्थशास्त्र की मानें, तो उल्लेख है कि इस राजा ने उच्च आदर्श स्थापित किए थे। उन्होंने कहा कि प्रजा की खुशी में उनकी खुशी है और प्रजा की परेशानियाँ उनकी अपनी परेशानियाँ हैं। हालाँकि इस बात की सूचना नहीं है कि राजा ने, इन आदर्शों का अनुपालन कितना किया। मेगस्थनीज के अनुसार, "राजा की मदद करने के लिए एक बौद्धिक परिषद् से सहायता मिलती थी।

Continue ....

Dr. Madan Paswan,
Sub.:- History

07.12.2020

③

B.A. Part- I (Hons.) Paper- Ist

पाठ्यक्रम Unit-II : Pre-Mauryan Period

(iii) Foreign Invasions — Iranian and Macedonian

ईरानी आक्रमण

उत्तर-पूर्व भारत में, छोटी रियासत और गणराज्य धीरे-धीरे मगध साम्राज्य में मिल गए। हालाँकि ई० पू० छठी शताब्दी में उत्तर-पश्चिम भारत ने एक अलग तस्वीर पेश की। कम्बोज, गान्धार और मद्रास जैसी कई छोटी रियासतों ने आपस में संघर्ष किए। इस क्षेत्र में मगध की तरह कोई शक्तिशाली साम्राज्य नहीं था, जो युद्धग्रस्त समुदायों को मिलाकर संगठित साम्राज्य बना सके। चूँकि यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध था, इसने अपनी ओर पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित किया। इसके अलावा, हिन्दूकुश के दर्रों से यहाँ आसानी से प्रवेश किया जा सकता था। ईरान के आकिमिनिया के शासकों ने, जिन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार उसी समय मगध साम्राज्य के राजकुमारी एवं राजकुमारों की तरह किया, उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमा पर राजनीतिक मतभेदों का लाभ उठाया। ईरान का शासक डारीयस ने ई०पू० 516 में उत्तर-पश्चिम भारत की सीमा में प्रवेश किया और पंजाब, सिन्धु के पश्चिमी भाग एवं सिन्ध पर कब्जा कर लिया। यह क्षेत्र 20वें प्रान्त या ईरान के रियासत में परिवर्तित हो गया। जिसमें कुल 28 रियासतें थीं। जिसमें — ① सिन्ध ② उत्तर-पश्चिमी सीमा ③ पंजाब का हिस्सा शामिल था, जो सिन्धु के पश्चिम में था। यह पंजाब का सबसे उपजाऊ और घनी आबादी वाला हिस्सा था; जो सिन्धु के पश्चिम में था। यहाँ से 360 टैलेण्ट सोने का अनुदान मिलता था, जो ईरान को अपने एशियाई प्रान्तों से प्राप्त कुल राजस्व का 1/3 हिस्सा था।

ईरानी सेना में भारतीय प्रजा को भी भर्ती किया जाता था। डैरियस के उत्तराधिकारी जैरक्सेस ने यूनानियों के खिलाफ लम्बे युद्ध के लिए भारतीयों को अपनी सेना में भर्ती किया। प्रतीत होता है कि एलेक्जेण्डर के भारत पर आक्रमण के पहले भारत ईरानी साम्राज्य का एक हिस्सा था।

Continue ....

History

07.12.2020

(4)

B.A. Part-I (Hons.) Paper-IInd

पाठ्यक्रम Unit-I: Movements and Revolutions

(iv) Industrial Revolution :—

आधुनिक युग के आरंभ में यूरोप में हुए पुनर्जागरण ने समाज में मध्य वर्ग और मध्यमवर्गीय मूल्यों की स्थापना करके एक नये युग का आरंभ किया था, लेकिन लम्बे समय तक मध्यवर्ग की शक्ति उजागर नहीं हो पायी थी। औद्योगिक क्रांति ने इस वर्ग की शक्ति को अभिव्यक्त किया। अब वैज्ञानिकों, कुशल शिल्पियों, प्रबंधकों आदि का प्रभाव बढ़ गया। इंग्लैण्ड आज जो कुछ है वह औद्योगिक क्रान्ति की ही देन है। हम सभी यह जानते हैं कि Industrial Revolution सबसे पहले इंग्लैण्ड में ही शुरू हुआ और इसलिए इसके प्रभाव भी सबसे पहले वहीं देखे गये। इसने इंग्लैण्ड के चरित्र और संस्कृति को ऐसे बदल दिया कि पहले के इंग्लैण्ड से यह सर्वथा भिन्न हो गया। अब यह देश पूरी दुनिया का अगुवा हो गया।

औद्योगिक क्रान्ति ने मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि की। श्रमिकों को अमानुषिक एवं निराशाजनक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था और इन पर उद्योगपतियों का शोषण बढ़ता गया। उन्हें दुर्गन्ध भरे वातावरण में रहना पड़ता था और कोई छुट्टी नहीं दी जाती थी।

1853 की इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट रिपोर्ट में काम करने के कारण ही श्रमिकों के स्वास्थ्य में गिरावट हुई थी। उनका वेतन भी कम था और उनके परिवार की स्थिति भी चिंताजनक थी। इन सभी तथ्यों के मद्देनजर इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि Industrial Revolution के प्रारंभिक वर्षों में श्रमिकों की दशा शोचनीय थी।

18वीं शताब्दी के मध्य से 19वीं सदी के अन्त तक यूरोप की जनसंख्या में तीन गुनी वृद्धि हुई। जनसंख्या में हुई इस वृद्धि को Industrial Revolution का परिणाम कहा जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में हुई महत्वपूर्ण खोजों के कारण मृत्यु दर में कमी होने से भी जनसंख्या में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त 19वीं सदी के आरंभ तक इंग्लैण्ड में और फिर यूरोप में जो कृषि क्रांति हुई थी, उसके कारण अधिकांश लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन मिलने लगा और वे अधिक स्वस्थ रहने लगे।.....Continue...